बी ए प्रथम वर्ष
प्रथम प्रश्न-पत्र

— डा० कृपा शंकर यादव

⇒ 2. संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम (Structural Functional Analysis)

→ आमण्ड एवं पावेल के द्वारा प्रयोग

- संस्थाओं की संरचना एवं कार्यों का विश्लेषण
- विधायिका संसद की एक संरचना है।
- संरचना के अस्तित्व में स्थायित्व — प्रकार्यात्मक (Functional)
- संरचना के अस्तित्व पर आघात — दुष्क्रियात्मकता (Dys-Functional)

→ इस उपागम के अंतर्गत तीन प्रश्न हैं:—

(i) किसी भी व्यवस्था में कौन से बुनियादी कार्यों का सम्पादन होता है।
(ii) किस संरचना द्वारा वे सम्पन्न किये जाते हैं।
(iii) किन परिस्थितियों में उन कार्यों को पूरा किया जाता है।

→ विशेषताएं :— (i) सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था पर बल
(ii) विशिष्ट कार्यों की शर्त का प्रतिपादन
(iii) विविध संरचनाओं में प्रकार्यात्मक अंतर्निर्भरता
(iv) नयी प्रकार की संरचनाओं का निर्माण या प्रतिस्थापना
(v) प्रकार्यात्मक या विकार्यात्मक संरचनाओं की मान्यता

→ राजनीतिक व्यवस्था जितनी विकसित होगी उतनी संरचनाएँ भी उतनी ही विशेषीकृत होंगी। राजनीतिक संरचनाएँ विशेषीकृत हो।

⇒ 3. मार्क्सवादी-लेनिनवादी उपागम (Marxist-Leninist Framework)

→ सोवियत संघ का विकास सिद्धान्त (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) तुलनात्मक विश्लेषण का वैकल्पिक ढांचा बन सकता है। (स्टेफेन क्लार्कसन)

— सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था को इकाई मानकर उसकी प्रक्रियात्मक अभिव्यक्तियों को समझना। अंतःशास्त्रीय अध्ययन दृष्टिकोण।

— शक्ति के आर्थिक पहलू की सर्वोपरिता।

— उत्पादन और वितरण के साधनों पर सीमित स्वामित्व है, समाज का समाज में वितरण — ये तथ्य राजनीतिक व्यवस्था के वास्तविक प्रकृति के निर्धारक हैं।

→ विशेषताएं: (i) प्रत्ययी (वर्ग संघर्ष, राज्य या सर्वहारा) स्थायित्व (ii) समग्रवादी पद्धति (iii) गत्यात्मकता — वर्ग संघर्ष द्वारा (iv) सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक ढांचा।